कर्मभूमि : कथ्य और शिल्प

श्री श्याम नन्दन (सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार) - 845401

Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, चौथा सेमेस्टर

प्रश्नपत्र: हिन्दी उपन्यास (HIND3010)

❖ अनुक्रम

➢ कर्मभूमि

- **कथ्य :-** किसान-शोषण एवं लगानबंदी आंदोलन, दलितों के मन्दिर-प्रवेश का प्रश्न, स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी, मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति का विरोध एवं अन्य विषय
- **शिल्प :-** कथानक-संयोजन, भाषा एवं शैली, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, देशकाल एवं वातावरण, उद्देश्य

➢ निष्कर्ष

➢ सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

❖ कर्मभूमि

- कर्मभूमि उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1932 ई. है|
- उर्दू मे ये 'मैदान-ए-अमल' नाम से 1934 ई. मे प्रकाशित हुआ|
- प्रेमचंद का 'कर्मभूमि' उपन्यास, महात्मा गाँधी की वैचारिकता से प्रभावित, गाँधीवाद के व्यावहारिक पक्ष को चित्रित करने वाला उपन्यास है।
- इस उपन्यास में अछूतोद्धार, अछूतों के मदिर-प्रवेश का प्रश्न, किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए लोकतांत्रिक और अहिंसात्मक आन्दोलन का चित्रण है।

❖ किसान-शोषण एवं लगानबंदी आंदोलन

- प्रेमचंद यह जानते थे कि भारतीय किसान, अंग्रेजी हुकूमत और जमींदारों के दो पाटों के बीच पिसता जा रहा है।
- फसल अच्छी हो या न हो, लगान देनी ही पड़ती थी। पैदावार भले ही कम हो, फिर भी लगान पूरी देनी पड़ती थी।
- जमींदारों और ब्रिटिश हुकूमत द्वारा किसानों की भुखमरी और गरीबी के बावजूद उन पर लगान-वसूली के लिए अत्याचार किए जाते थे।
- प्रेमचंद की दृष्टि में व्यवस्था का यह अंधेर किसानों के लिए किसी कयामत से कम नहीं है।
- प्रेमचन्द यह जानते थे कि स्वतन्त्रता आन्दोलन तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक देश के किसान और मजदूर उससे न जुड़ें।
- प्रेमचंद ने इसे समझा और किसानों पर हो रहे अत्याचार को अंग्रेजी हुकूमत की शोषणकारी नीतियों का परिणाम चित्रित करते हुए 'कर्मभूमि' में किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन और अंग्रेजी शासन द्वारा उसके दमन चक्र का विश्वसनीय और यथार्थ चित्रण किया है।

❖ दलितों के मन्दिर-प्रवेश का प्रश्न

- दलितों के मन्दिर में प्रवेश करते ही भगवान भ्रष्ट हो जाते हैं, इस प्रचलित मान्यता के कारण दलितों को मन्दिर में प्रवेश का अधिकार नहीं था|
- नगर के मन्दिर में हो रही कथा के समय दलित समुदाय के लोगों को मार-पीटकर इसीलिए निकाल दिया गया|
- किसी विशेष जाति का होने के कारण किसी व्यक्ति या समुदाय को अछूत मानकर दुर्व्यवहार करना धर्म-सम्मत नहीं हो सकता।
- दलितों की चेतना को जागृत करने के लिए प्रेमचंद उन्हें समझाते हैं कि दलितों का जन्म केवल गुलामी करने के लिए नहीं हुआ है बल्कि वे तो समाज की बुनियाद हैं।
- *'धर्म के लिए प्राण देना, अछूत-नीति में भी उतने ही गौरव की बात है जितनी द्विज-नीति में।'-प्रेमचंद*
- दलितों को मंदिर-प्रवेश का अधिकार मिल जाने पर भी उनकी सामाजिक स्थिति पर तब तक कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, जब तक कि उनकी आर्थिक और शैक्षिक स्थिति में सुधार नहीं होता।

❖ स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

- देश के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी समय की माँग थी जिसे प्रेमचंद ने समझा और अपने साहित्य के माध्यम से जनता तक देश और काल की इस माँग को संप्रेषित भी किया।
- दलितों के मंदिर-प्रवेश के लिए हो रहे हो आंदोलन का नेतृत्व सुखदा करती है।
- नगर में गरीब-मजदूरों के आवास के लिए म्यूनिसपालिटी के खिलाफ हो रहे आंदोलन में सुखदा, नैना, सकीना,पठानिन और रेणुका देवी का नेतृत्व इसी उद्देश्य से चित्रित है|
- किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन में मुन्नी की भूमिका का चित्रण प्रेमचंद इसी उद्देश्य से करते हैं।

❖ मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति का विरोध

- प्रेमचंद 'बाबू पैदा करने वाली' मैकाले की शिक्षा-पद्धति का विरोध करते हैं।
- प्रेमचंद, छात्रों-नवयुवकों में सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति बढ़ रही उपेक्षा की प्रवृत्ति के लिए अंग्रेजी-शिक्षा पद्धति की मूल्यहीनता को ही कारण मानते हैं।
- प्रेमचंद नि:शुल्क शिक्षा-व्यवस्था का समर्थन करते थे।
- 'कर्मभूमि' में अंग्रेजी शिक्षा के जन-विरोधी चरित्र को अनावृत कर तत्कालीन शैक्षणिक संस्थाओं में बढ़ रही अर्थ-केन्द्रीयता पर तीखा व्यंग्य किया गया है|
- *"यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देने वाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले और पैसे के लिए अपनी आत्मा बेच देने वाले छात्र निकलते हैं तो आश्चर्य क्या है?" - प्रेमचंद*
- प्रेमचंद छात्रों को भारतीय दृष्टिकोण और उदात्त भारतीय जीवन-मूल्यों से संपृक्त नि:शुल्क शिक्षा का समर्थन करते हैं।

❖ कुछ अन्य विषय

- ‘कर्मभूमि’ उपन्यास में प्रेमचंद ने अमरकांत- सकीना के प्रेम-सम्बंध और अमरकांत और सलीम की मित्रता के बहाने साम्प्रादायिक सद्भाव का संदेश देने का प्रयास किया है।
- प्रेमचंद ‘कर्मभूमि’ में सफाई अभियान और मादक वस्तुओं के बहिष्कार का कार्यक्रम चलाते हैं |
- इस उपन्यास में प्रेमचंद हाशिए के लोगों के जीवन का चित्रण करते हुए उनकी आवास-व्यवस्था का प्रश्न उठाते है|
- म्यूनिसपालिटी के बहाने प्रेमचंद संवैधानिक संस्थाओं में बैठे जनप्रतिनिधियों की स्वार्थपरता और परिवारवाद की कलई खोलते हैं।

❖ शिल्प

कथानक संयोजन

- उपन्यास में कथा का विकास और अन्त दोनों स्वाभाविक और कलात्मक हैं।
- जो घटनाएं उपन्यास के प्रमुख पात्र से प्रत्यक्षत: नहीं जुड़ी हैं, कथानक में उनका संयोजन भी सफलतापूर्वक हुआ है|
- *" 'कर्मभूमि' के कथा-संगठन में नवीनता होने पर भी लेखक उसे एक सूत्र से सम्बद्ध और संग्रंथित करने में सफल हुआ है|" - कमल किशोर गोयनका*
- कर्मभूमि में भी गाँव और नगर दोनों की कथाएं हैं किंतु उनका संयोजन इतनी कुशलता से किया गया है कि दोनों अलग-अलग होकर भी कथानक संघटन को न तो शिथिल करती हैं और न ही प्रभावान्विति को कम करती हैं।
- 'कर्मभूमि' में स्वप्न-दर्शन, घटना-संकेत, अनिष्ट-आशंका, आकस्मिक घटना-संयोग एवं पात्रों की कृत्रिम मृत्यु-योजना नहीं है।

❖ भाषा एवं शैली

- उपन्यास में उर्दू भाषा के शब्दों का बहुतायत प्रयोग हुआ है|
- भाषा में मुहावरे का प्रयोग इतना हुआ है कि प्राय: 'भाषा ही मुहावरेदार' हो गयी है| भाषा में मुहावरों के साथ लोकोक्तियों और सूक्तियों का भी प्रयोग किया गया है|
- मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा के प्रवाह और प्रभावान्विति में वृद्धि हुई है|
- उपन्यास की भाषा और शैली विषय-वस्तु तथा उसके देशकाल और पात्रों के अनुकूल है|
- उपन्यास की कथा-प्रस्तुति में अन्य पुरुष एवं वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है|

❖ पात्र एवं चरित्र-चित्रण

- कर्मभूमि' उपन्यास में हर वर्ग, जाति और धर्म के पात्र हैं।
- 'कर्मभूमि' में प्रेमचंद ने गौण पात्रों का उपयोग कथा-संघटन में इतनी कुशलता से किया है कि ग्राम और नगर कथाओं के पृथकत्व का प्राय: पता नहीं चलता है।
- प्रमुख केंद्रीय पुरुष एवं महिला पात्र क्रमश: अमरकांत और सुखदा हैं।
- *प्रेमचंद के उपन्यासों में " 'कर्मभूमि" पहला उपन्यास है जिसमें मुस्लिम पात्रों की संख्या इतनी अधिक है। ये मुस्लिम पात्र - सलीम, सकीना, पठानिन, गजनवी आदि उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।"* - कमल किशोर गोयनका

❖ संवाद-योजना

- ‘कर्मभूमि’ में संवाद-योजना युगीन वातावरण के अनुकूल है|
- कथोपकथन और संवाद जन-सामान्य में प्रचलित आम बोल-चाल के शब्दों से युक्त बोधगम्य एवं पात्रानुकूल हैं|
- पात्रों के संवाद प्रसंगानुकूल, सहज, स्वाभाविक और प्रभावशाली हैं|

❖ देशकाल एवं वातावरण

- ‘'कर्मभूमि' उपन्यास अपने युगीन जीवन के यथार्थ चित्रण में एक सफल रचना है।
- दलितों के मंदिर-प्रवेश का प्रश्न, स्वंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी युगीन प्रभाव और आवश्यकता दोनों के सापेक्ष प्रासंगिक एवं अनुकूल हैं|
- उपन्यास में साम्प्रादायिक सद्भाव, मादक वस्तुओं का बहिष्कार, सफाई अभियान, जाति आधारित भेदभाव का उन्मूलन, नि:शुल्क विद्यालय, भारतीय दृष्टिकोण वाले शिक्षा-पद्धति आदि पर गांधी जी की वैचारिकता का प्रभाव है|

❖ उद्देश्य

- उपन्यास में चित्रित विभिन्न आन्दोलनों के द्वारा देश के दलितों, किसानों-मजदूरों और महिलाओं को स्वतंत्रता आन्दोलन से जोड़कर उसका स्वरूप और व्यापक बनाना इसका प्रमुख उद्देश्य है|
- *कर्मभूमि' उपन्यास का उद्देश्य राजनीतिक एवं सामाजिक पराधीनता के विरुद्ध जनता के विद्रोह को अभिव्यक्त करना है|' - कमल किशोर गोयनका*

❖ निष्कर्ष

- प्रेमचंद का 'कर्मभूमि' उपन्यास, महात्मा गाँधी की वैचारिकता से प्रभावित, गाँधीवाद के व्यावहारिक पक्ष को चित्रित करने वाला उपन्यास है।
- इस उपन्यास में प्रेमचंद ने अछूतोद्धार, अछूतों के मदिर-प्रवेश का प्रश्न, लगानबन्दी आन्दोलन, सामाजिक राजनीतिक आंदोलनों में स्त्रियों की भागीदारी, पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति और महँगी अंग्रेजी शिक्षा के जन-विरोधी चरित्र का विरोध, अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए लोकतांत्रिक और अहिंसात्मक आन्दोलन आदि कुशलतापूर्वक चित्रण किया है।

❖ सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- कर्मभूमि- प्रेमचंद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान, कमल किशोर गोयनका, यश पब्लिकेशन, नयी दिल्ली
- प्रेमचंद- कमल किशोर गोयनका, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली
- प्रेमचंद और उनका युग, डॉ, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

धन्यवाद